क्या हैं प्राइमरी और कॉकस ?

प्राइमरी और कॉकस राजनीतिक दलों और राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित नियमों के तहत सभी 50 राज्यों में आयोजित होते हैं। इनके जरिये राष्ट्रपति के पद के लिए रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टियों के उम्मीदवार तय होते हैं।

कॉकस पार्टी के सदस्यों की स्थानीय बैठकों के जरिए उम्मीदवारों को समर्थन का अनुमान लगाते हैं जबकि प्राइमरी चुनाव में किसी भी पार्टी के लिए पंजीकृत सदस्यों द्वारा राज्य भर में सीधे मतदान के जरिये समर्थन को आंका जाता है।

इन आयोजनों से यह पता लग जाता है कि आगे चल कर राजनीतिक पार्टियों के राष्ट्रीय सम्मेलन में किन उम्मीदवारों को राज्य के मत मिलेंगे। प्राइमरी मतदाता असल में ऐसे प्रतिनिधि समूह को चुनते हैं जो किसी विशेष उम्मीदवार के समर्पित समर्थक होते हैं और यह विश्वास रहता है कि वे राष्ट्रीय सम्मेलन में उसी व्यक्ति को अपना मत देंगे। विजयी उम्मीदवारों को समर्थन देने वाले पार्टी के राज्य स्तरीय नेता प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं।

प्राइमरी प्रक्रिया पर नज़र रखना आसान होता है क्योंकि समाचार मीडिया यह खबर देते रहते हैं कि हर राज्य में प्रत्येक उम्मीदवार के कितने प्रतिनिधि जीते और नामांकन सुनिश्चित करने के लिए कितने प्रतिनिधि और चाहिए।

ऐतिहासिक रूप से, सबसे पहले मध्य-पश्चिम में आयोवा कॉकस और न्यू इंग्लैंड में न्यू हैम्पशायर प्राइमरी का आयोजन किया जाता है। ये आयोजन प्रत्येक चार-वर्षीय राष्ट्रपति चुनाव के दौरान जनवरी में किए जाते हैं। इस कारण इन दोनों छोटे-से राज्यों का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यदि इनमें उम्मीदवारों की स्थिति ठीक रही तो उन्हें बाद के प्राइमरी चुनावों के लिए ज़्यादा समर्थन और धन मिल जाता है। और, अगर उनकी स्थिति ठीक नहीं रहती है तो वे चुनावी दौड़ से बाहर हो सकते हैं। इस वर्ष, कुछ बड़े राज्य भी अपने प्राइमरी चुनाव जल्दी आयोजित कर रहे हैं ताकि नामांकन की प्रक्रिया पर इसका ज़्यादा असर पड़ सके। उन्होंने राष्ट्रीय पार्टी नेताओं की इस धमकी के बावजूद यह किया है कि इस प्रकार के प्राइमरी चुनावों में चुने गए प्रतिनिधियों को राष्ट्रीय सम्मेलनों में हो सकता है, पूरा समर्थन न मिल सके। जनवरी प्रारंभ तक, 2008 के प्राइमरी चुनावों की समय सारणी तय नहीं हुई थी।

– एल.के.एल एवं एस.जी.